



भारत का दावत पत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

१२८१

सं 641]

नई दिल्ली, गुरुवार, विसम्बर 9, 1988/अग्रहायण 18, 1910

No. 641] NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 9, 1988/AGRAHAYANA 18, 1910

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या की जाती है जिससे इक पह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

उद्योग भागासय

(कंपनी कार्य विभाग)

आवेदन

नई दिल्ली, 9 विसम्बर, 1988

का. ना. 1159(अ).—कंपनी विक्री बोर्ड, नई विल्ली, नई दिल्ली का यह समाचार हो गया है कि गुजरात एवं आयल इंस्ट्रुमेंट्स और गुजरात एवं इंस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड की पूर्णतः स्वामित्व समन्वयी है और एक पूर्णतः सरकारी स्वामित्व की सरकारी कंपनी है, और जो मूल रूप से चावल की भूसी से तेल निकालते, भूसी तथा आयल खेणी चावल भूसी तेल विनिर्मित करने के लिए निगमित की गई थी ने, ऐसे संर्वत्र स्थापित करता और उसे संचालित करना अपनी क्षमता और संसाधनों से बाहर पाया है। नियकी कंपनी गुजरात एवं इंस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड, जो पूर्णतः सरकारी स्वामित्व की कंपनी है, जिन दोनों के रजिस्ट्रीकृत कार्यालय जेत उद्योग भवन, उच्च न्यायालय के सामने, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380014 है, जो एक कंपनी के रूप में समर्पित कर दिया जाना चाहिए।

और गुजरात एवं इंस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड, जो एक नियकी कंपनी है, उपस्कर, अक्षित और सामग्री के बुलंड संसाधनों का उपयोग, प्रसासनिक खर्चों में बचत तूका प्रस्त ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध करवा सकती है। लोकहित में यह आवश्यक है कि गुजरात एवं आयल इंस्ट्रुमेंट्स लिमिटेड, जो गुजरात एवं इंस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड की पूर्णतः स्वामित्व की समन्वयी है, जो पूर्णतः सरकारी स्वामित्व की कंपनी है, जिन दोनों के रजिस्ट्रीकृत कार्यालय जेत उद्योग भवन, उच्च न्यायालय के सामने, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380014 है, जो एक कंपनी के रूप में समर्पित कर दिया जाना चाहिए।

और प्रस्तावित आदेश के प्रारूप की एक प्रति पूर्वांकित कंपनीयों भव्यति, मैसर्स गुजरात एवं आयल इंस्ट्रुमेंट्स और मैसर्स गुजरात एवं इंस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड को प्रकाशित करने के लिए देजी थी। कंपनी के किसी शेयरधारक/लिनवार से कोई आक्रमण/सुमाव प्राप्त नहीं हुआ है।

और दोनों कंपनियों, भव्यति गुजरात एवं आयल इंस्ट्रुमेंट्स लिमिटेड और गुजरात एवं इंस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड में सीम का भीर कम्पनी

29 दिसम्बर, 1987 और 29 जनवरी, 1988 को हुई बोर्ड की अपनी बैठकों में पारित संकल्प द्वारा समामेलन का प्रारूप आदेश अनुमति दर्श दिया है। अतः कंपनी विधि बोर्ड, भारत सरकार के कंपनी काय विभाग की अधिकृतता सं. सा. का. नि. 433(अ) तारीख 18 अक्टूबर, 1972 के साथ पठित कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 वा 1) की धारा 396 की उपधारा (1) और उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त समितियों का प्रयोग करते हुए, उक्त दो कंपनियों को एक कंपनी में समामेलित करने के लिए निम्नलिखित आदेश करता है, अधिनि. :-

1. संक्षिप्त नाम :

इस आदेश का संक्षिप्त नाम “गुजरात एयो-आमल इंस्ट्रुमेंट्स और गुजरात एयो-इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड (रामानेलमग) आदेश, 1988 है”।

2. परिमाणाएँ :

- (क) “नियत दिन” से वह कार्यक्रम अनिवार्य है, जिसके बहुत आदेश राजसभा में अधिकृतता की जाता है।
- (ख) “विधित कंपनी” से गुजरात एयो-आमल इंस्ट्रुमेंट्स लिमिटेड अधिकृत है।
- (ग) “परिणामी कंपनी” से गुजरात एयो-इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड अधिकृत है।

3. शेयर धारण पैटर्न :

- (क) गुजरात एयो-आमल इंस्ट्रुमेंट्स लिमिटेड वा 31 अक्टूबर, 1986 को शेयरधारण पैटर्न निम्नलिखित है :

गुजरात एयो-आमल इंस्ट्रुमेंट्स लिमिटेड के शेयरधारकों के नाम	शेयरों की संख्या	रुपये
गुजरात एयो-इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड और उसके नामनिवृत्तिशीली (सम्पूर्ण जारी की आई, प्रतिकृत और समायंत वूंजी गुजरात एयो-इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड और उसके नाम निर्देशितियों द्वारा धारित है)	6157	6,15,700

- (ख) गुजरात एयो-इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड का 30 जून, 1986 को शेयरधारण पैटर्न निम्नलिखित है :

शेयर धारक का नाम	शेयरों की संख्या	रुपये
केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार	5,06,000	5,06,00,000
द्वारा संयुक्त रुप से (2,58,000		
राज्य सरकार द्वारा और 2,48,000		
केन्द्रीय सरकार द्वारा)		

4. यह समामेलन पूर्णस्था स्वामित्व अनुपंगी (अन्तरक) कंपनी का उसकी नियंत्री (अन्तरिनी) कंपनी के बाय है। अन्तरिनी कंपनी गुजरात एयो-इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड अन्तरक कंपनी गुजरात एयो-आमल इंस्ट्रुमेंट्स लिमिटेड के पूर्णतः समादलत 6,15,700/- रुपये की पूर्ण प्रतिशुत पूंजी धारित बनती है जिसमें प्रत्येक 100 रुपये के 6157 शेयर हैं। यारं यह खेत्र पूंजी वित्ती दब्द के बास धारित हैं तो गेयरों का अनुपातिक आंतरिक अन्तरिती कंपनी अधिनि. गुजरात एयो-इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड में अधिकृत होता। इस बात को ध्यान में रखते हुए समामेलन होते पर कंपनी के किसी भी शेयर का आंतरित,

अन्तरक कंपनी के 6157 शेयरों की उनत सम्पूर्ण पूंजी के संघर्ष में आवश्यक नहीं है। तबनुसार समामेलन की स्तरीय को प्रभावी बनाने के लिए अंतरिती कंपनी से वह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह अंतरक कंपनी के 6157 साधारण शेयरों के बदले पूर्णतः समादलत माने जाने वाले कोई साधारण शेयर जारी करे।

अतः गुजरात एयो-आमल इंस्ट्रुमेंट्स लिमिटेड में पूर्णतः समादलत प्रत्येक 100 रुपये के 6157 साधारण शेयर, जो गुजरात एयो-इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड के नाम में समाप्त हैं, रुप हो जाएगे।

5. कंपनियों का समामेलन :

- (1) नियत दिन से ही विधित कंपनी का उपकम उसके विलंबादों के अवधित रहते हुए, यदि कोई हो, गुजरात एयो-इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड को अन्तिम और अंतिम नियति हो जाएगा। वह कंपनी दीह ऐसे प्रक्रम पर बनायेगा से परिणामी कंपनी स्वतंत्र जाएगी।
- (2) लेक्षा के प्रयोजनों के लिए समामेलन, विधित कंपनी के 31 अक्टूबर, 1986 को यथा विद्यमान लेक्षा परिक्रिया लेखांगों और तुलन पत्र के प्रति निर्देश से प्रभावों होगा और उसके परिणाम संव्यवस्थाएँ गों एक सामान्य लेक्षा में तूल किया जाएगा, विधित कंपनी दीक्षिती पश्चात्यर्ती तारीख को अपना अधिकार लेक्षा दीपावल करते औं भवेता नहीं हो, जाएगी और परिणामी कंपनी विधित कंपनी के उपकम तो, 31 अक्टूबर, 1986 को यथा विद्यमान सुलगा पत्र के अनुसार सभी आस्तियों और वाचिकों को अद्वितीय करेगी उसके पश्चात् के सभी संव्यवस्थाएँ का पूर्ण उत्तरवादित्व स्वीकार करेगी।

स्पष्टीकरण :-

विधित कंपनी के उपकम के प्रत्यांत गों अधिकार, शक्तियां, प्राधिकार, विधिषाधिकार और सभी रामान्त, जान ना ल्पावर विद्यमें अंतर्गत आयात, नियति लाइसेंस, नगदी अंतिम, आन्तरितीया, राजस्व अतिवेष, विनियान और ऐसो सम्पत्ति में, या उसके उद्दृत होने वाले अन्य सभी वित्त और अविकार जो नियत दिन के ठोक पूर्वी विधित कंपनी के हों, और उससे संबंधित सभी विकल, लेखे और पत्तावेष तथा विधित कंपनी के उस समय विद्यमान सभी अपूर्ण, अवित्य और बाध्यानां, चाहे वे किसी भी प्रकार की उस समय हो, ग्राते हैं।

6. संविदाओं प्राप्ति की व्याख्या :

इस आदेश में अन्तरिक दस्त उपलब्धों ने अवैत रहते हुए, सभी संविदाएं, विनेख वंदेयत, करार कौर अन्य विवरों वाहे ने किसी प्रकार की हों, जिनमें विधित कंपनी एक पत्रकार है, नियत दिन के ठोक पूर्व अस्तित्व में है या प्रभावों हैं, परिणामी कंपनी के विश्वद या उसके पत्र में पूर्णतः बलशील और प्रसादी होंगे और उन्हें वैसे ही पूर्ण रूप से वो और प्रस्तुती रूप से प्रवृत्त किया जा सकेगा सभी संविदाओं की अज्ञाय विणामी कंपनी उसमें एक पत्रकार ही।

7. विधिक कार्यवाहियों की व्याख्या :

यदि नियत दिन को, विधित कंपनी द्वाया या उसके विश्वद कोई वाप, अभियोजन, अपील या किसी भी प्रक्रिति की अन्य विधिक कार्यवाही संविद है, तो वह विधित कंपनी के उपकम जो पत्रियों कंपनी द्वाया होते हुए, यी उप-प्राधिक नहीं होगी या उसे बदल नहीं किया जाएगा अवधी किसी भी प्रकार से उस पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पहुंचा, किन्तु ऐसा वाप, अभियोजन, अपील या अन्य विधिक कार्यवाही परिणामी कंपनी द्वाया या उसके विश्वद जारी रखी जा सकेगी, अन्तर और प्रवृत्ति की या सकेगी जिस रोति से और यित्व विस्तार तक वह विधित कंपनी द्वाया या उसके विश्वद जारी रखी जा सकती थी।

प्रग्रसर और प्रवर्तित की जा सकती थी या जारी रखी जा सकती, या प्रग्रसर और प्रवर्तित की जा सकती, यदि वह आवेदा नहीं किया गया होता।

8. कराधान की मावत उपवधः

नियत दिन से पूर्व, विषटित कम्पनी द्वारा नियत कारबूर के तांडों और अभिलाभों (जिसके अन्तर्गत संचित हानियां और अन्तर्भूत अधिकारी भी हैं) की वास्तव यथास्थिति सभी कर और कर प्रतिवाय भी नियत दिन से पूर्व परिणामी कम्पनी द्वारा यथास्थिति संरेख या उन्होंने प्रतिदेश होते। ऐसा कराधान ऐसे, खियातों और राहगों के अर्गेन होता जो अभ्यकृ अधिकारीय, 1961 (1961 का 43) के अधीन इस कम्पनी के परिणामस्वरूप अनुमति किए गए। 31 अक्टूबर, 1936 के पश्चात् विषटित कम्पनी के सभी सामग्री और द्वानियां अवृक्त अधिकारीय, 1961 के अधीन परिणामी कम्पनी की यथास्थिति लाभ या हानियां समझी जातीं। विषटित कम्पनी द्वारा 1 नवंबर 1986 की वा उसके पश्चात् संदर्भ अधिकृ कर, जिसमें सोत पर काटा गया कर भी है, यदि कोई हो, को अभ्यकृ अधिकारीय, 1961 के अधीन परिणामी कम्पनी द्वारा संतुल किया गया समझा जाएगा।

9. विषटित कम्पनी के विद्युतान अधिकारीयों और अन्य कर्मचारियों की व्यावस उपवधः : विषटित कम्पनी में नियत दिन के ठीक पूर्व नियोजित प्रत्येक पूर्णांकित अधिकारी या कर्मचारी (विषटित कम्पनी के नियोजक को छोड़कर) नियत दिन से परिणामी कम्पनी का, वारांनी अधिकारी या कर्मचारी वन जायेगा और वह उसमें प्राप्ता पद का व्यापनी में उसी अवधि के लिए और उसी नियतनामों और गतों पर और वैसे ही अधिकारीयों और विशेषाधिकारीयों के साथ घाराण करेगा जो वह, यदि वह अवैश नहीं किया गया होता, विषटित कम्पनी के अधीन घाराण कराता और वह तब सक ऐसा कल्पा देगा जब उस परिणामी कम्पनी में उसका नियोजन सम्भव हो ये समाप्त नहीं कर दिया जाता या जो उस उसका नियोजन और शर्त पारम्परिक सहमति द्वारा अनुमत कर से परिवर्तित नहीं कर दी जाती।

10. नियोजकों का उपवधः :

विषटित कम्पनी का प्रत्येक नियोजक, जो नियत दिन के ठीक पूर्व उस रूप में पद धारण किये हुए हैं, नियत दिन को विषटित कम्पनी का नियोजक नहीं रह जायेगा।

11. गुजरात एवं नायन इस्टरीजन लिमिटेड का विषटा :

एस आदेश के अन्य उपवधों के भवीन रहते हुए नियत दिन से गुजरात एवं आगल इस्टरीजन विषटित हो जायेगा और गोरे पांच वर्ष के विषटित कम्पनी के विलक्षण या उसके किसी नियोजक या किसी अधिकारी के विलक्षण उसकी ऐसे नियोजक या अधिकारी को हैसियत में, उसे कोई वाका करेगा और न तो कोई मांग या कार्यालयी अधिकारी करेगा या दृढ़ायेगा, सिवाय वहां तक जहां उस प्रावेद्य के उपवधों को प्रवर्तित करने के लिए आवश्यक हो।

12. अधिकृ नियित की समस्या :

विषटित कम्पनी के सभी अधिकारीयों और कर्मचारी, कर्मचारी अधिकृ नियित और प्रकारी उपवध अधिकारीय, 1952 की स्क्रीन के अधीन उस कर्मचारी अधिकृ नियित के सदस्य में रहेंगे जिसके बीच सदस्य हैं और नियत दिन से मैरास गुजरात एवं इस्टरीजन कारबूरेशन लिमिटेड, इन अधिकारीयों और कर्मचारीयों दो वाक्त, उन्होंने पर, जिन पर विषटित कम्पनी उका कर्मचारी अधिकृ नियित में अधिकारीय कर रही थी, उक्त नियित में कर्मचारीयों के अधिकारीय करेगा और करता रहेगा।

13. कम्पनी रजिस्ट्रार द्वारा आवेदा का रजिस्ट्रीकरण :

कम्पनी विधि बोर्ड, द्वारा आदेश के राजपत्र में अधिसूचित किये जाने के पश्चात् यथानीधि, कम्पनी रजिस्ट्रार, गुजरात द्वारा द्वारा आदेश की एक प्रिय

भेजेगा जिसकी प्राप्ति पर, कम्पनी रजिस्ट्रार, गुजरात परिणामी कंपनी द्वारा विहित फीन के दैश्य किये जाने पर आदेश को रजिस्टर करेगा और इस आदेश की प्रति भावत होने को तरोंब से एक भास के मात्र उसके रजिस्ट्रीकरण की अपने हस्ताक्षर से प्रवर्तित करेगा।

उसके पश्चात् कम्पनी रजिस्ट्रार, गुजरात अन्नरक कंपनी से संबंधित उसके पास रजिस्ट्रीकृत अनिवार्यता का फाइल किये गये सभी दस्तावेज, मेस्सेंजर गुजरात एवं इस्टरीजन कारबूरेशन, लिमिटेड की विधि के साथ अन्तर्क कंपनी का जमानेज किया जाना है, जाकर में दर्तेगा और उसे यदेकित करेगा और इस प्रकार सर्वेक्षित दस्तावेजों को अपनी फाइल में रखेगा।

14. परिणामी कंपनी के संगम हासिल और संगम अनुबंधः

गुजरात एवं इस्टरीजन कारबूरेशन लिमिटेड के संगम ग्राम और संगम अनुबंध, जिन रूप में वे नियत दिन के ठीक पूर्व विद्युतान ये, नियत दिन से परिणामी कंपनी के संगम ग्राम और उस अनुबंध ही जाएंगे।

[24/3/88-सं. एल-III]

एस. कुमार, राज्या (जिसकी विधि बोर्ड)

MINISTRY OF INDUSTRY

(Department of Company Affairs)

ORDER

New Delhi, the 9th December, 1988

S.O. 1159 (E).—Whereas, the Company Law Board, New Delhi is satisfied that the Gujarat Agro-Oil Enterprises Limited, a wholly owned subsidiary of Gujarat Agro-Industries Corporation Limited, a wholly owned Government Company which was incorporated mainly to extract oil from Rice Bran, Brans and manufacturing Edible Grade Rice Bran Oil has found it beyond its capacity and resources to set up and run such plants.

And whereas, the holding company Gujarat Agro-Industries Corporation Limited, a wholly owned Government Company having its registered Office at Khetudyod Bhavan, Opp. High Court, Navrangpura, Ahmedabad-380014 has all the resources such as financial, marketing expertise, experience of setting plant for extracting oil from Rice Bran, marketing Edible Rice Bran Oil, administrative experience, eligibility to get subsidy from Government and other sources to strengthen the profitability and resources of the Corporation.

And whereas, the Gujarat Agro-Industries Corporation Limited the holding company can provide the use of scarce resources of equipments, personal and material, save administrative expenses, provide employment in drought hit rural areas, it is essential in the public interest that Gujarat Agro-Oil Enterprises Limited which is wholly owned subsidiary of Gujarat Agro-Industries Corporation Limited, a wholly owned Government Company both having their Registered Offices at Khetudyog Bhavan, Opp: High Court, Navrangpura, Ahmedabad-380014 should be amalgamated into a single company.

And whereas, a copy of the proposed order was sent in draft to the aforesaid companies namely M/s. Gujarat Agro Oil Enterprises Ltd. and M/s Gujarat Agro Industries Corporation Ltd. for publication. No objection/suggestion was received from any shareholder/creditor of the companies.

And whereas both the Companies namely Gujarat Agro-Oil Enterprises Limited and Gujarat Agro-Industries Corporation Limited have approved the Scheme and the draft order of amalgamation by resolution passed in their board meetings held on 29th December, 1987 and 29th January, 1988, respectively, and no objection is raised or suggestion is made by anyone. Therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-Section (1) and (2) of Section 396 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956) read with the Notification of the Government of India in the Department of Company Affairs No. GSR 443(E) dated 18th October, 1972, the Company Law Board hereby makes the following order to provide for the amalgamation of the said two Companies into a single Company, namely :—

1. SHORT TITLE :

This order may be called "the Gujarat Agro-Oil Enterprises Limited and the Gujarat Agro-Industries Corporation Limited (Amalgamation) Order, 1988."

2. DEFINITIONS :

In this Order unless the context otherwise requires :

- (a) "the appointed day" means the date on which the order is notified in the Official Gazette.
- (b) "dissolved Company" means the Gujarat Agro-Oil Enterprises Limited.
- (c) "resulting Company" means the Gujarat Agro-Industries Corporation Limited.

3. SHARE HOLDING PATTERN :

- (a) The Share holding pattern of the Gujarat Agro-Oil Enterprises Limited as on 31st October, 1986 is as under :—

Name of Shareholders in Gujarat Agro-Oil Enter- prises limited	No. of Shares	Amount Rs.
Gujarat Agro-Industries Corporation Limited and its nominees. (Entire issued, subscribed and paid-up Capital is held by Gujarat Agro-Industries corporation Limited and its nominees).	6157 Equity Shares of Rs. 100/-	6,15,700/-

(b) The Share holding pattern of Gujarat Agro-Industries Corporation Limited as on 30th June, 1986 is as under :—

Name of Shareholder	No. of Shares	Amount Rs.
The State Government and the Central Government jointly (2,58,000/- by State Government and 2,48,000/- by Central Government)	5,06,000 Equity Shares of Rs. 100/- each	5,06,00,000/-

4. The amalgamation is of a wholly owned subsidiary (transferor) Company with its holding (transferee) Company. The transferee Company Gujarat Agro-Industries Corporation Limited holds the entire subscribed Capital of Rs. 6,15,700/- consisting of 6157 Shares of Rs. 100/- each fully paid of the Gujarat Agro-Oil Enterprises Limited, the transferor Company which if held by another, would have required allotment of proportionate Shares in the transferee Company i.e. Gujarat Agro-Industries Corporation Limited. In view of this, on amalgamation, no Shares of the transferee Company need to be allotted in respect of the said entire holding of 6157 Shares of the transferor Company. Accordingly, in order to give effect to the Scheme of amalgamation, the transferee Company is not required to issue any Equity Shares credited as fully paid-up against the said 6157 Equity Shares of the transferor Company.

Therefore, all the 6157 Equity Shares of Rs. 100/- each fully paid-up in Gujarat Agro-Oil Enterprises Limited which are held in the name of Gujarat Agro-Industries Corporation Limited shall stand cancelled.

5. AMALGAMATION OF THE COMPANIES :

(1) On and from the appointed day, the undertaking of the dissolved Company, subject to encumbrances thereof, if any, shall stand transferred to and vest in the Gujarat Agro-Industries Corporation Limited which Company shall immediately on such transfer, be deemed to be the Company resulting from the amalgamation.

(2) For accounting purposes, the amalgamation shall be effected with reference to the audited accounts and Balance Sheet as on the 31st October, 1986 of the dissolved Company and the transactions thereafter shall be pooled into a common account, the dissolved Company, should not be required to prepare the final accounts as on any later date and the resulting Company shall take over the undertaking of the dissolved Company, i.e. all assets and liabilities according to the Balance Sheet as on 31st October, 1986, and accept full responsibility for all the transactions thereafter.

EXPLANATION :

The undertaking of the dissolved Company shall include all rights, powers, authorities and privileges and all property, movable or immovable including import, export licences, cash balance reserves, revenue balances, investments and all other interests and rights in or arising out of such property as may

belong to, or be in the possession of the dissolved Company immediately before the appointed day, and all books, accounts and documents relating thereto and also all debts, liabilities, duties and obligations of whatever kind then existing of the dissolved Company.

6. SAVING OF CONTRACTS ETC :

Subject to the other provisions contained in this order, all contracts, deeds, bonds, agreements and other instruments of whatever nature to which the dissolved Company is a party, subsisting or having effect immediately before the appointed day, shall have full force and effect against or in favour of the resulting Company and may be enforced as fully and effectually, as if, instead of the dissolved Company, the resulting Company had been a party thereto.

7. SAVING OF LEGAL PROCEEDINGS

If on the appointed day, any suit, prosecution appeal or other legal proceeding of whatever nature by or against the dissolved Company be pending the same shall not abate or be discontinued, or be in any way prejudicially affected by reasons of the transfer to the resulting Company of the undertaking of the dissolved Company or of anything contained in this order, but the suit, prosecution, appeal or other legal proceedings may be continued, prosecuted and enforced by or against the resulting Company in the same manner and to the same extent as it would or may be continued, prosecuted and enforced by or against the dissolved Company if this order had not been made.

8. PROVISIONS WITH RESPECT TO TAXATION

All taxes as well as tax refunds as the case may be in respect of the profits and gains (including accumulated losses and unabsorbed depreciation) of the business carried on by the dissolved Company before the appointed day shall be payable by or refundable to the resulting Company as the case may be subject to such concession and reliefs as may be allowed under the Income Tax Act, 1961 (43 of 1961) as a result of this amalgamation. The profits or losses of the dissolved Company after 31st October, 1986 shall be deemed to be the profit or losses as the case may be of the resulting Company under Income Tax Act, 1961. Advance Tax including tax deducted at source, if any, paid by the dissolved Company on or after 1st November, 1986 shall be deemed to have been paid up by the resulting Company under Income Tax Act, 1961.

9. PROVISIONS RESPECTING EXISTING OFFICERS AND OTHER EMPLOYEES OF THE DISSOLVED COMPANY :

Every whole time officer or other employee (excluding the directors of the dissolved Company) employed immediately before the appointed day in the dissolved Company, shall as from the appointed day, become an officer or other employee as the case may be, of the resulting Company and shall hold office or service therein by the same tenure and upon the same terms and conditions and with the same rights and privileges as he would have held the same under the dissolved Company, if this order had not been made, and shall continue to do so unless and until his employment in the resulting Company is duly terminated or until his remuneration and conditions of employment are duly altered by mutual consent.

10. PROVISION OF DIRECTORS :

Every director of the dissolved Company holding office as such immediately before the appointed day shall cease to be a Director of the dissolved Company on the appointed day.

11. DISSOLUTION OF THE GUJARAT AGRO-OIL ENTERPRISES LIMITED :

Subject to the other provisions of this order, as from the appointed day, the Gujarat Agro-Oil Enterprises Limited shall be dissolved and no persons shall make, assert or take any claims, demands or proceedings against the dissolved Company or against a director or an officer thereof in his capacity as such Director or officer, except in so far as may be necessary for enforcing the provisions of this order.

12. MEMBERSHIP OF PROVIDENT FUND

All officers and employees of the dissolved Company shall continue to be members of Employees Provident Fund under the Scheme of Employees Provident Fund and Miscellaneous Provisions Act, 1952 of which they are members and M/s. Gujarat Agro-Industries Corporation Limited shall with effect from the appointed day make and continue to make the employees contributions to the said Employees Provident Fund in respect of these officers and employees at the same rates as were being made by the dissolved Company.

13. REGISTRATION OF THE ORDER BY THE REGISTRAR OF COMPANIES :

The Company Law Board, shall as soon as may be after this order is notified in the Official Gazette,

send to the Registrar of Companies Gujarat, a copy of this order, on receipt of which the Registrar of Companies, Gujarat, shall register the order on payment of the prescribed fees by the resulting Company and certify under his hand the registration thereof within one month from the date of receipt of a copy of this order.

Thereafter, the Registrar of Companies, Gujarat, shall forthwith include all documents registered, recorded, or filed with him relating to the transferor Company on the file of M/s. Gujarat Agro Industries Corporation Limited, with whom the transferor Company has been amalgamated and consolidate these

and shall keep such consolidated documents on his file.

14. MEMORANDUM AND ARTICLES OF ASSOCIATION OF THE RESULTING COMPANY.

The Memorandum and Articles of Association of the Gujarat Agro-Industries Corporation Limited, as they stood immediately before the appointed day shall, as from the appointed day, be the Memorandum and Articles of Association of the resulting Company.

[24/2/88-CI-III]

S. KUMAR, Member, (Company Law Board)